यह पुस्तक **Council for the Indian School Certificate Examinations, New Delhi** द्वारा निर्मित एवं अनुशंसित नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

8

नवीन पल्लव

हिंदी पाठ्य पुस्तक

Text-cum-Workbook

संपादकद्वय

डॉ० रामसुधार सिंह
एम. ए., पीएच. डी.
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
उदय प्रताप स्वायत्तशासी कॉलेज, वाराणसी
सम्मानित प्रवक्ता
नवसाधना रीजनल पास्टोरल सेंटर, वाराणसी

डॉ० विवेक पाण्डेय
साहित्याचार्य, एम. ए., पीएच. डी.
रीडर, हंडिया पी.जी. कॉलेज, हंडिया
इलाहाबाद

विशेष सहयोग
फ़ादर रॉक डिकोस्टा

JOY IN LEARNING ™
MARINA
अमृता प्रकाशन
(मरीना पब्लिकेशंस प्रा. लि. की एक इकाई)

अमृता प्रकाशन

(मरीना पब्लिकेशंस प्रा. लि. की एक इकाई)

Administrative Office :
4/37 Site-2, UPSIDC Industrial Area,
Ajanta Compound, Mohan Nagar, Sahibabad
Delhi NCR-201007 • Mob. : 8130194610

Registered Office :
D 53/83, Luxa Road
Varanasi-221010 • Telefax : 0542-2371238
E-mail : info@marinapublications.com
Website : www.marinapublications.com

KOLKATA :
20A, Brindaban Mallick Lane
Hrishikesh Park, Amherst Street
Kolkata-700009 • Ph : 9433007143

LUCKNOW :
177/69, Pul Jhau Lal, Gwynne Road, Aminabad
Lucknow-226018 • Telefax : 0522-2231483

PATNA :
302, Saryug Vihar Apartment
Near Gayatri Mandir, Gosai Tola
Patna-800013 • Mob. : 9838107581

BHOPAL :
152, Gajju Pipalia Sheetal City
Mandideep, Bhopal-462046 • Mob. : 09617205852

RAIPUR :
217, Kabir Nagar Phase-1, Raipur-492099 • Mob. : 7518103706

BANGALORE :
32/1, 1st Cross Chennammanakere
Tank Bed Road, Near Vidyapeetha Circle
Bangalore-560028 • Mob. : 09620317896

GUWAHATI :
80, Ground Floor, J.P. Agrawalla Road, Bye Lane-01
P.O. Baralumukh, Guwahati-781009
Mob. : 09971604822

प्रथम संस्करण 2018, परिमार्जित संस्करण 2019

कॉपीराइट © अमृता प्रकाशन

सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशन के लिए वर्जित है।

ACKNOWLEDGEMENTS :
The publishers have made every effort to contact copyright holders. However, if any material has not been acknowledged, the publishers would be pleased to correct this at the earliest.

No part of this publication which is material protected by this copyright notice may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior permission from the publishers.

Information contained in this book has been obtained by its authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of their knowledge. However, the publisher and its authors shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.

संपादन सहयोग

प्रो० विजय बहादुर सिंह
हिंदी विभाग
काशी हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी

डॉ० सुमन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हरिश्चंद्र पी०जी० कॉलेज, वाराणसी
एवं
एकेडमिक काउंसलर (इग्नू)

डॉ० श्रद्धा सिंह
सेंट्रल हिंदू गर्ल्स स्कूल (बी.एच.यू.)
वाराणसी

डॉ० सुमन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
गवर्नमेंट पी०जी० कॉलेज
मगरहा, मिर्जापुर

जय प्रकाश मिश्र
शोध समन्वयक



अपनी ओर से.....

'**नवीन पल्लव**' हिंदी पाठ्य-पुस्तक शृंखला **Council for the Indian School Certificate Examinations, New Delhi** द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में परंपरा एवं आधुनिकता का निर्वाह करते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास को लक्ष्य में रखकर निर्मित की गई है। पुस्तक निर्माण प्रक्रिया में इसका पूरा प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के निर्दिष्ट सिद्धांतों शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रुचिपूर्ण, मनोरंजक एवं सहजता से परिपूर्ण, साथ ही भाषा सीखने का बोझ कम करने तथा पाठ्यसामग्री को रोजमर्रा के जीवन से जोड़कर किंतु भाषा शिक्षण के निकट रहते हुए सरलतम एवं सहजतम तरीके से बच्चों को परिचित कराया जाए।

प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक शृंखला के निर्माण में पूरी सजगता के साथ इस बात का ध्यान रखा गया है कि बच्चों में स्वयं से भाषा सीखने की क्षमता विकसित हो। सोपान दर सोपान व्याकरण को बालमन की पकड़ के अनुरूप बिना दुरूहता के प्रदान करने का प्रयास किया गया है। भाषा-कौशल हेतु बच्चों में स्वतंत्र रूप से चिंतन-क्षमता के विकास की कोशिश उसकी अपनी कल्पना शक्ति या विचारों को भाषा के माध्यम से सहज ढंग से एवं पूर्णरूप से अभिव्यक्त करने के लिए की गई है। हम यह संपूर्ण विश्वास से कह सकते हैं कि प्रस्तुत शृंखला नितांत छात्रोपयोगी एवं भाषा के आधारभूत संस्कार को विकसित करने में सक्षम है।

'**नवीन पल्लव**' पाठ्य-पुस्तक शृंखला की प्रस्तुत पुस्तक कक्षा 8 के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। इसमें भाषा-ज्ञान के विविध कौशलों को समझने एवं विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विकसित करने के उद्देश्य से रोचक कहानियाँ, कविताओं, सामयिक निबंधों, जीवनी, लेख आदि अनेक विधाओं का समावेश किया गया है। पाठों के अंत में पूरी सावधानी से अभ्यास का निर्माण किया गया है। भाषा-ज्ञान की दृष्टि से अभ्यासों में वर्ण, पद, वाक्य-संरचना तक को अत्यंत सरलता एवं सहजता से युक्त बनाकर रखना इस शृंखला की विशिष्ट पहचान है। पुस्तक निर्माण के क्रम में इस बात का ध्यान रखा गया है कि बच्चे प्रारंभ से अंत तक प्रसन्नतापूर्वक कहीं गाते हुए एवं परस्पर कुछ चर्चा करते हुए भाषा को सीख सकें। शृंखला के पाठों का संकलन इस रूप में किया गया है कि विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम, पर्यावरण संरक्षण, सामयिक समस्याओं के ज्ञान के साथ ही परिश्रम, सहयोग, स्वच्छता, मिलजुल कर काम करने की भावना इत्यादि नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके।

'**नवीन पल्लव**' हिंदी पाठ्य पुस्तक शृंखला के निर्माण से पूर्व अनेक विशिष्ट विद्वानों, उत्कृष्ट शिक्षकों एवं सजग अभिभावकों के महत्त्वपूर्ण सुझाव आमंत्रित किए गए एवं यथासंभव उन्हें यत्र-तत्र सम्मिलित भी किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक शृंखला को स्तरीय एवं बालोपयोगी बनाने में सहयोग के लिए हम प्रो० विजय बहादुर सिंह, हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय; डॉ० सुमन सिंह, हरिश्चंद्र पी०जी० कॉलेज, वाराणसी; डॉ० श्रद्धा सिंह, सेंट्रल हिंदू गर्ल्स स्कूल, वाराणसी; डॉ० सुमन सिंह, गवर्नमेंट पी०जी० कॉलेज, मगरहा, मिर्जापुर एवं श्री जय प्रकाश मिश्र, शोध समन्वयक के विशेष आभारी हैं। इसी क्रम में यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि पुस्तक शृंखला के निर्माण में हमें निरंतर मार्गदर्शन एवं सकारात्मक सहयोग आदरणीय फ़ादर रॉक डिकोस्टा से मिलता रहा है। अहिंदी भाषी होते हुए भी हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति आपका समर्पण स्तुत्य है। इस भाव को साक्षी रखकर हम आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

अंत में हम आभारी हैं उन विशिष्ट लेखकों एवं रचनाकारों के, जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक शृंखला में आधार सामग्री के रूप में समाहित की गई हैं। आशा है प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक शृंखला अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल एवं समर्थ होगी। संशोधन एवं परिवर्द्धन एक सतत् प्रक्रिया है। इस शृंखला को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु हमें शिक्षकों एवं अभिभावकों के बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। स्खलिति मानव प्रवृत्ति है। अतः पुस्तक शृंखला में यदि कहीं त्रुटि या विसंगति हो, तो उसे भी आप संपादक मंडल तक प्रेषित करने की कृपा करें।

संपूर्ण विनम्र अनुरोध के साथ.....



डॉ० रामसुधार सिंह
डॉ० विवेक पाण्डेय

पुस्तक के बारे में .....

बालोपयोगी पुस्तक शृंखला का निर्माण निःसंदेह अत्यंत दुरुह कार्य है। भाषा-शिक्षण की दृष्टि से बालमन का संस्पर्श करना तथा अत्यंत सावधानी के साथ एक भाषा का आकार उसके मस्तिष्क में चित्रित करना बड़ी कुशलता की माँग करता है। बच्चा जिस परिवेश में विकसित होता है, वहाँ बहुभाषा का संजाल फैला होता है। इसके बीच में अत्यंत सजगता एवं शोधपूर्ण सोपान-क्रम से भाषा की आधारकृत संरचना करने की कोशिश ही इस पुस्तक शृंखला का बृहत्तर उद्देश्य है। 'नवीन पल्लव' शृंखला द्वारा नवांकुरों के मस्तिष्क में बिना किसी विशेष श्रम के हिंदी भाषा को समग्रता से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। शृंखला की प्रत्येक पुस्तक के संपूर्ण कलेवर को निम्नलिखित बिंदुओं में विभाजित किया गया है।

1. **पाठ-संचयन–**

   बच्चों के मूल स्वभाव, स्वाभाविक प्रवृत्तियों, रुचि, गतिविधियों, परिवार एवं परिवेश को ध्यान में रखकर पाठों का निर्माण तथा निबंध, कहानी, कविता आदि विविध विधाओं का संचयन किया गया है।

2. **चित्र-निर्माण–**

   बहुरंगी चित्र बालमन को आकर्षित करते हैं, अतः बच्चों के सहज बोध के लिए पाठों में रोचक चित्रों का सन्निवेश किया गया है। चित्रकार के द्वारा कहानी, कविता आदि के भावों को चित्रों में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

3. **शब्द-मैत्री–**

   कठिन शब्दों के अर्थ मात्र शब्दकोश के माध्यम से ही नहीं दिए गए हैं, अपितु बच्चों के दैनन्दिन व्यवहार के शब्दों से अर्थ तलाश कर पाठ में दिया गया है।

4. **श्रुतलेख–**

   देवनागरी लिपि की यह विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। शब्दों को सही उच्चारण के साथ सुनकर शुद्ध लिखना भाषा-शिक्षण की प्रारंभिक शर्त है। अतः पाठों में आए हुए कुछ जटिल शब्दों को छात्रों के लेखन हेतु दिया गया है।

5. **पठन एवं लेखन कौशल–**

   इसके अंतर्गत पाठ से संबंधित मौखिक, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के साथ एक ऐसा भी प्रश्न रूप निर्मित किया गया है, जिससे विद्यार्थियों को समग्र रूप से पाठ का बोध हो सके।

6. **व्याकरण एवं भाषा कौशल**

   प्रारंभिक स्तर से ही विद्यार्थियों को भाषा के व्याकरणिक स्वरूप को समझाना आवश्यक होता है। व्याकरण से संबंधित महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के द्वारा भाषा-ज्ञान को विकसित करना 'व्याकरण एवं भाषा कौशल' का उद्देश्य है।

7. **रचनात्मक अभिव्यक्ति–**

   बच्चे स्वभावतः विचारशील होते हैं। अतः पाठों के पढ़ लेने के बाद उनसे संबंधित विविध विचार उनके मन में आते हैं। 'रचनात्मक अभिव्यक्ति' के द्वारा पाठ से इतर कतिपय चिंतनशील बिंदुओं को इसके अंतर्गत रखा गया है।

8. **कौशल विकास–**

   जिज्ञासा बालकों की सहज प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति को सृजनात्मक रूप देने के उद्देश्य से पाठ्येतर कुछ अन्य क्रिया-कलापों को 'कौशल विकास' शीर्षक के अंतर्गत दिया गया है।

9. **शिक्षण-संकेत–**

   इसके अतंर्गत दिए गए अभ्यासों के अतिरिक्त पाठ से संबंधित अन्य विविध तथ्यों की जानकारी देने के उद्देश्य से आवश्यकतानुसार शिक्षकों के लिए संकेत दिए गए हैं।

10. **'पाठ संदेश' एवं 'जीवन मूल्य'–**

    पाठों के प्रारंभ में अत्यंत संक्षिप्त रूप में केंद्रीय भाव दिए गए हैं तथा अंत में विषयवस्तु से प्राप्त सारभूत संदेश का उल्लेख किया गया है।

विशेष– पुस्तक शृंखला में जिन रचनाकारों की रचनाएँ दी गई हैं उनके चित्र एवं संक्षिप्त जीवन परिचय पाठों के अंत में देने का प्रयास किया गया है। इससे बच्चों को रचनाकारों के जीवन एवं कृतियों की जानकारी प्राप्त होगी।

पाठ मूल्यांकन

पाठ संख्या	पाठ का नाम	विधा	पठन, लेखन, व्याकरण एवं भाषा कौशल	रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं कौशल विकास
1.	**वीणा वादिनी वर दे!**	कविता	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, सुमेलित करना, उपसर्ग अलग करना, विपरीतार्थक शब्द लिखना, पदों में 'र' का प्रयोग करना, समास-विग्रह करना।	अनुप्रास अलंकार के उदाहरण ढूँढ़कर लिखना, अपने देश के लिए वरदानों के बारे में लिखना, इस कविता में जिन वरों को माँगा गया है, उनको पी.पी.टी. के माध्यम से दृश्य-सामग्री द्वारा प्रदर्शित करना, अपनी कल्पना शक्ति से 'वरदान' शीर्षक पर कविता लिखना।
2.	**परोपकार**	कहानी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, वाक्य सही है या ग़लत, लिखना, मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग करना, संधि-विच्छेद करना, वाक्यों में उद्देश्य पद लिखना, वाक्यों के पदों में धातु स्पष्ट करना।	परोपकार के महत्त्व पर दस वाक्य लिखना, 'वृक्षों का जीवन परोपकार के लिए होता है।' इस वाक्य की व्याख्या करना, गुरुजनों से वृक्षों के महत्त्व से संबंधित जानकारी एकत्र करना।
3.	**सच्ची वीरता**	निबंध	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, किसने किससे कहा, लोकोक्तियों के अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग करना, शब्दों में 'त्व' प्रत्यय जोड़ना, 'अ' या 'अन' लगाकर विपरीतार्थक शब्द बनाना।	वीर एवं कायर पुरुषों की विशेषताएँ लिखना, आग लगने या बाढ़ आने पर अपने मित्रों के साथ, पीड़ितों की मदद के बारे में लिखना, पाँच वीर नारियों के चित्र अभ्यास पुस्तिका में लगाकर उनका परिचय लिखना, वीर रस की कोई कविता कंठस्थ करना।
4.	**गौरा**	रेखाचित्र	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, सुमेलित करना, उपसर्गों को जोड़कर लिखना, वर्तनी शुद्ध करना, पर्यायवाची शब्द लिखना।	किसी पालतू पशु के स्वभाव व उसके क्रियाकलाप के बारे में लिखना, रेखाचित्र शैली में लिखी लेखिका की अन्य रचनाओं का परिचय देना, गौ-हत्या रोकने के लिए बनाए गए कानूनों की जानकारी एकत्र करना और सहपाठियों से चर्चा करना।
5.	**छोड़ दो**	कविता	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, उपसर्ग अलग करना, विशेषण-विशेष्य मिलाना, रेखांकित परसर्गों से प्रकट होने वाले कारकों का नाम लिखना।	स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के अंतर को स्पष्ट करना, कविता पढ़ना,पी.पी.टी. के माध्यम से विभिन्न चित्रों द्वारा 'छोड़ दो' कविता की व्याख्या करना और अपनी व्यक्तिगत टिप्पणी लिखना 'आज़ादी का महत्त्व' विषय पर 150 शब्दों का निबंध लिखना।
6.	**गुरु जी**	कहानी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, किसने किससे कहा, समास विग्रह करना, संधि करना, उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाना, विराम चिह्न का प्रयोग करना।	लालू को सुधारने के उपायों के बारे में लिखना, अतिथियों के साथ किए जानेवाले व्यवहारों पर पाँच वाक्य लिखना, अतिथि सत्कार की कथाओं को इंटरनेट पर पढ़ना और डायरी में नोट करना।
7.	**संस्कृति और सभ्यता**	निबंध	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, वाक्य सही है या ग़लत, लिखना, प्रकृति-प्रत्यय अलग करना, उपसर्ग अलग करना, रेखांकित परसर्गों को पहचानकर कारक का नाम लिखना।	'संस्कृति', 'सभ्यता' और 'संस्कार' शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, 'धीरे-धीरे चलना साथी' कविता को कंठस्थ करके अपने शिक्षक को सुनाना, 'भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव' विषय पर आलेख लिखना।
8.	**देवताओं का अंचल : कुल्लू**	यात्रा-वृत्तांत	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, सुमेलित करना, रेखांकित परसर्गों के कारकों के नाम लिखना, समास-विग्रह करना प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाना।	कुल्लू और मनाली की विशेषताओं को लिखना, अपने द्वारा की गई यात्रा का वर्णन करना, दर्शनीय स्थलों संबंधी परियोजना कार्य, भीम की पत्नी हिडिंबा के बारे में नेट से जानकारी प्राप्त करना।
9.	**रीढ़ की हड्डी**	एकांकी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, किसने किससे कहा, मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग करना, विशेषण छाँटकर लिखना।	बालक-बालिका भेद पर पाँच वाक्य लिखना, परिचर्चा आयोजित करना, एकांकी को कहानी-रूप में लिखना। दहेज-प्रथा के नियंत्रण पर एक आलेख लिखना।
10.	**हिमयुग की वापसी**	विज्ञान-कथा	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, किसने किससे कहा और प्रत्यय युक्त शब्दों को रेखांकित करना, वाच्य पहचान कर लिखना।	'अंटार्कटिका' के बारे में अध्यापक से जानकर लिखना, 'पानी तेरे रूप अनेक' विषय पर निबंध लिखना। वैज्ञानिकों के चित्र चिपका कर उनके विषय में लिखना।

पाठ मूल्यांकन

पाठ संख्या	पाठ का नाम	विधा	पठन, लेखन, व्याकरण एवं भाषा कौशल	रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं कौशल विकास
11.	**बाल-लीला**	पद	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, सही विकल्प पर (✓) लगाना, पर्यायवाची लिखना, तत्सम रूप लिखना, प्रत्यय लगाकर शब्द बनाना।	कृष्ण के नामों का अर्थ स्पष्ट करना, कृष्ण से संबंधित प्रसंग को लिखना, 'वात्सल्य का सम्राट' और 'पुष्टिमार्ग का जहाज़' के संदर्भ में अध्यापक से जानकारी प्राप्त करना।
12.	**बाढ़ का बेटा**	ललित निबंध	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, वाक्य का सही क्रम लिखना, अर्थ के आधार पर वाक्य-प्रयोग करना, तत्सम रूप लिखना, वाक्यों का रूपांतरण करना।	बाढ़ की समस्याओं पर लिखना, प्राकृतिक आपदाओं पर लिखना, आपदा प्रबंधन की जानकारी प्राप्त करना और लिखना।
13.	**माँ पढ़ती हैं**	कहानी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, समास विग्रह करना, उपसर्ग अलग करना, संधि करना	पुस्तक विमोचन के बारे में लिखना, प्रसिद्ध पुस्तकें और उनके लेखकों के नाम लिखना, अपनी माँ के बारे में दस वाक्य लिखना। लेखक, संपादक, प्रकाशक और मुद्रक के बारे में पुस्तकालय से सहयोग लेकर लिखना। इंटरनेट से एस.आर. हरनोट के बारे में जानना और उनकी अन्य कहानियाँ पढ़ना।
14.	**स्वतंत्रता पुकारती**	कविता	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, भावार्थ लिखना संधि-विच्छेद करना, उपसर्ग अलग करना, प्रकृति-प्रत्यय का उल्लेख करना।	दो स्वतंत्रता-सेनानियों के नाम लिखना और उनके वीरता-पूर्ण कार्यों का वर्णन करना, 'वीर तुम बढ़े चलो' कविता को कक्षा में सुनाना, शिवाजी के विषय में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करना और मित्रों को सुनाना, 'लोकतंत्र का महत्त्व' विषय पर एक आलेख लिखना।
15.	**सफ़ेद सच!**	कहानी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, किसने किससे कहा, प्रकृति-प्रत्यय अलग करना, विपरीत अर्थवाले शब्द-युग्म बनाना, मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करना और वाक्यों में प्रयोग करना।	पाठ से तोतली बोली में बोले गए संवादों को लिखना एवं हिंदी भाषा में रूपांतरित करना, हिमांशु जोशी की अन्य कहानियों को नेट पर पढ़ना और मित्रों को सुनाना।
16.	**बेताल की कथा**	व्यंग्य-कथा	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, किसने किससे कहा, 'आत्मा' शब्द जोड़कर नया शब्द बनाना, वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखना, मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करना।	'बेताल की कथा' को उच्चारण की शुद्धता, आरोह-अवरोह, रोचकता के साथ कक्षा में सुनाना, विक्रम और बेताल की कहानियाँ पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़ना, विक्रम और बेताल की कथा पर सामूहिक चर्चा करना।
17.	**इतने ऊँचे उठो**	कविता	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, भावार्थ लिखना, समास विग्रह करना एवं समास का नाम लिखना, उपसर्ग लगाकर शब्द बनाना, प्रकृति-प्रत्यय का उल्लेख करना।	सामाजिक बुराइयों का समाज पर पड़नेवाले दुष्प्रभावों के बारे में लिखना, व्यक्ति के ऊँचा उठने के कारणों का उल्लेख करना।
18.	**कोलकाता की संत मदर टेरेसा**	जीवनी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, सही विकल्प का चयन करना, संधि करना, विपरीतार्थक लिखना, उपसर्गों से शब्द बनाना।	नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीयों के नाम लिखना, मदर टेरेसा पर अपने विचार लिखना।
19.	**पोस्टमैन**	कहानी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, किसने किससे कहा, कारक बताना, संज्ञा शब्द छाँटना, विशेषण-विशेष्य अलग करना।	मित्र को पत्र लिखना, तार सेवा के बारे में जानकारी प्राप्त करके लिखना, इंटरनेट पर 'कहानी पोस्टकार्ड की' को पढ़ना।
20.	**दीवानों की हस्ती**	कविता	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, पंक्तियों को पूरा करना, प्रत्यय लगाकर शब्द बनाना, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखना, रेखांकित कारकों के नाम लिखना।	सत्य और श्रम की व्याख्या करना, ' राष्ट्रभक्तों की मस्ती' विषय पर कक्षा में सामूहिक चर्चा करना, भगवतीचरण वर्मा की अन्य कविताओं को इंटरनेट पर पढ़ना।
21.	**अनेकमुखी गंगा**	निबंध	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, सही विकल्प चुनना, संधि-विच्छेद करना, पर्यायवाची शब्द लिखना, उपसर्ग अलग करना।	गंगोत्री, गोमुख, गंगासागर, त्रिवेणी के विषय में लिखना, गंगा प्रदूषण के कारण एवं निवारण पर अपने विचार लिखना, 'नदी बचाओ' विषय पर दस स्लोगन (नारे) लिखकर विद्यालय के सूचना-पट्ट पर लगाना।
22.	**तृणभारत**	कहानी	श्रुतलेख, लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करना, समास-विग्रह करना, विपरीतार्थक लिखना।	एकता से होनेवाले लाभ के विषय में लिखना, महाभारत के विषय में तथ्यों को जानना, अभिमन्यु एवं घटोत्कच के विषय में जानकारी प्राप्त कर लिखना।



पाठ क्रम

1. **वीणा-वादिनी वर दे!** 9
   - कविता
   सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

2. **परोपकार** 13
   - कहानी
   सुदर्शन

3. **सच्ची वीरता** 20
   - निबंध
   सरदार पूर्ण सिंह

4. **गौरा** 26
   - रेखाचित्र
   महादेवी वर्मा

5. **छोड़ दो** 32
   - कविता
   बालमणि अम्मा

6. **गुरु जी** 37
   - कहानी
   शरतचंद्र चट्टोपाध्याय

7. **संस्कृति और सभ्यता** 46
   - निबंध
   रामधारी सिंह 'दिनकर'

8. **देवताओं का अंचल : कुल्लू** 52
   - यात्रा-वृत्तांत
   सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

9. **रीढ़ की हड्डी** 59
   - एकांकी
   जगदीश चंद्र माथुर

10. **हिमयुग की वापसी** 70
    - विज्ञान-कथा
    जयंत विष्णु नार्लीकर

11. **बाल-लीला** 79
    - पद
    सूरदास

12. **बाढ़ का बेटा** 84
    - ललित निबंध
    रामवृक्ष बेनीपुरी

13. **माँ पढ़ती हैं** 92
    - कहानी
    एस. आर. हरनोट

14. **स्वतंत्रता पुकारती** 101
    - कविता
    जयशंकर प्रसाद

15. **सफ़ेद सच!** 106
    - कहानी
    हिमांशु जोशी

16. **बेताल की कथा** 113
    - व्यंग्य-कथा
    हरिशंकर परसाई

17. **इतने ऊँचे उठो** 120
    - कविता
    द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

18. **कोलकाता की संत मदर टेरेसा** 125
    - जीवनी
    संकलित

19. **पोस्टमैन** 132
    - कहानी
    शैलेश मटियानी

20. **दीवानों की हस्ती** 142
    - कविता
    भगवतीचरण वर्मा

21. **अनेकमुखी गंगा** 147
    - निबंध
    काका कालेलकर

22. **तृणभारत** 154
    - कहानी
    विजयदान देथा

पाठ 1

वीणा-वादिनी वर दे!

(कविता)

पाठ से पहले

कवि माँ सरस्वती से वर माँग रहा है कि स्वतंत्र ध्वनि व अमरता के मंत्र से भारत को भर दें एवं अंधकार मिटाकर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश कर दें।

वर दे, वीणा-वादिनी वर दे!
वर दे, वीणा-वादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव
अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!
काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!
नव-गति, नव-लय, ताल-छंद नव,
नवल-कंठ, नव-जलद-मंद्र-रव,
नव-नभ के नव-विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!
वर दे, वीणा-वादिनी वर दे!

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'



जीवन मूल्य हमें अंधकार से प्रकाश की ओर चलने की कामना करनी चाहिए।



शिक्षण संकेत

कविता का सस्वर गायन कराएँ।

जीवन परिचय

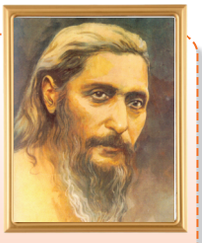

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1896 ई. में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल में हुआ था। इनके पिता उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के निवासी थे। निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबंध, आलोचना और संस्मरण भी लिखे हैं। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं– 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अर्चना', 'लिली', 'सुकुल की बीबी', 'अप्सरा', 'अलका', 'नये पत्ते', 'आराधना' आदि। सन् 1961 ई. में इनका देहावसान हो गया।



श्रवण एवं वाचन कौशल



वीणा-वादिनी – वीणा बजानेवाली अर्थात् माँ सरस्वती; **रव**– ध्वनि; **अमृत-मंत्र** – अमरता भरनेवाला मंत्र; **नव** – नया; **अंध-उर** – अज्ञानपूर्ण हृदय; **जननि** – माँ; **ज्योतिर्मय** – प्रकाशयुक्त; **निर्झर** – झरना; **कलुष** – पाप; **तम** – अंधकार; **हर** – हरण कर लेना; **जलद** – बादल; **मंद्र** – गंभीर; **नभ** – आकाश; **विहग-वृंद** – पक्षियों का समूह; **पर** – पंख।

श्रुतलेख

ज्योतिर्मय, निर्झर, कलुष, स्वतंत्र, विहग-वृंद, मंद्र

पठन एवं लेखन कौशल

(क) मौखिक प्रश्न–

1. प्रस्तुत कविता में किसकी वंदना की गई है?
2. स्वतंत्र-रव से क्या तात्पर्य है?
3. कवि माँ से किस प्रकार का निर्झर बहाने को कहता है?
4. कविता में किसको जगमग करने की बात कही गई है?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. कविता में किससे वर माँगा गया है?

   .....

2. बादलों का रव कैसा है?

   .....

3. भारत में क्या भरने की कामना की गई है?

   .....

4. कवि नव-स्वर किसे देना चाहता है?

   .....

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. जग को किस प्रकार जगमग किया जा सकता है?

.....

.....

2. कविता में प्रयुक्त 'नव' विशेषण के विशेष्य पदों को लिखिए।

.....

.....

3. 'नव पर, नव स्वर दे' का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

4. कविता में भारत के लिए कौन-सा वरदान माँगा गया है?

.....

.....

(घ) सुमेलित कीजिए–

विहग	मंत्र
स्वतंत्र	उर
अमृत	स्तर
अंध	वृंद
बंधन	भेद
कलुष	रव

व्याकरण एवं भाषा कौशल

(क) उपसर्ग अलग कीजिए–

1. निर्झर = ...
2. प्रकाश = ...
3. विहग = ...
4. अनुभव = ...

(ख) विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

1. प्रिय = ...
2. बंधन = ...
3. अमृत = ...
4. प्रकाश = ...
5. नव = ...
6. भेद = ...

(ग) निम्नलिखित पदों में 'र्' का प्रयोग कीजिए–

1. स्वतंत् = ... 2. ज्योतिमय = ...

3. निझर = ... 4. मंद = ...

(घ) दो पदों के मिलने को समास कहते हैं। कविता में 'वीणा-वादिनी' का अर्थ है– वीणा बजानेवाली अर्थात् सरस्वती। यह बहुब्रीहि समास का उदाहरण है। इसी प्रकार 'दशानन', 'पीतांबर', 'गजानन', 'चतुरानन' में भी बहुब्रीहि समास है। इनके समास-विग्रह लिखिए–

1. दशानन = ...

2. पीतांबर = ...

3. गजानन = ...

4. चतुरानन = ...

रचनात्मक अभिव्यक्ति

जहाँ कविता में एक ही अक्षर या वर्ण बार-बार आता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे- इस कविता में 'वीणा-वादिनी वर दे' में 'व' अक्षर कई बार आया है। इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

.....

.....

कौशल विकास

(क) इस कविता में कवि ने संसार के लिए अनेक वरदान माँगे हैं। आप अपने देश के लिए क्या वरदान माँगना चाहेंगे, लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(ख) 'वीणा-वादिनी' कविता में माँ सरस्वती से जिन-जिन वरों को माँगा गया है, उनको पी.पी.टी. के माध्यम से दृश्य सामग्री द्वारा प्रदर्शित करें।

(ग) अपनी कल्पना शक्ति से अभ्यास पुस्तिका में 'वरदान' शीर्षक पर एक कविता लिखने का प्रयत्न कीजिए।

पाठ 2

परोपकार

(कहानी)

पाठ से पहले

परोपकार को सबसे बड़ा पुण्य कहा गया है। लाला सदानंद के माध्यम से लेखक ने परोपकार की महत्ता को प्रकट किया है। परोपकारी व्यक्ति ही महामानव होता है।

पंडित शादीराम ने ठंडी आह भरी और सोचने लगे, 'क्या वह ऋण कभी सिर से न उतरेगा?'

वे ग़रीब थे, परंतु दिल के बुरे न थे। वे चाहते थे कि जिस तरह भी हो, अपने यजमान लाला सदानंद का रुपया अदा कर दें। उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था। अपना पेट काटकर बचाते थे, मगर जब चार पैसे जमा हो जाते, तो कोई न कोई ऐसा ख़र्च निकल आता था, जिससे सारा रुपया उड़ जाता। शादीराम के हृदय पर बरछियाँ चल जाती थीं, मगर वे कुछ कर न सकते थे। वे ग़रीबी की चक्की में पिस रहे थे।

इसी तरह कई साल बीत गए, शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपये जोड़ लिए। उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपये देने थे। उनका लड़का लगातार चार महीने बीमार रहा। बचाए हुए रुपये दवा में उड़ गए, पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया। अब चारों ओर फिर अंधकार था। उसमें प्रकाश की हलकी-सी किरण भी दिखाई न देती थी।



लाला सदानंद अपने पुरोहित की मज़बूरी को जानते थे। उन्हें इस रक़म की ज़रा भी परवाह न थी। वे इस बात से इतना डरते थे, मानो रुपये उन्हीं को देने हों। मगर शादीराम के दिल में शांति न थी। वे सोचा करते कि यह कैसे भलेमानस हैं, जो अपनी रक़म के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते? लाला सदानंद की भलमनसी के सामने उनकी आँखें नहीं उठती थीं।

एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए। उनकी अलमारी में कई सौ बांग्ला, हिंदी और अंग्रेज़ी की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले, "यह क्या है पंडित जी?"



शिक्षण संकेत

कक्षा में कहानी का वाचन कराएँ एवं छात्रों से लाला सदानंद के चरित्र की विशेषताओं को लिखवाएँ।

पंडित शादीराम ने उत्तर दिया, ''पुरानी पत्रिकाएँ हैं। बड़े भाई पढ़ने के शौकीन थे। वही ये पत्रिकाएँ मँगवाते थे। वे जब जीवित थे तो किसी को हाथ न लगाने देते थे। अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं। कोई पूछता भी नहीं।''

''रद्दी में क्यों नहीं बेच देते?''

इनमें चित्र हैं। जब कभी बच्चे रोने लगते हैं, तो एक-आध निकालकर दे देता हूँ। बच्चों का दिल बहल जाता है। लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा, ''दो, ज़रा देखें, कैसे चित्र हैं?''

पंडित शादीराम ने कई सुंदर और रंगीन चित्र दिखाए, लाला सदानंद कुछ देर तक उलट-पलट कर देखते रहे। सहसा बोले, ''ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं। अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ, तो हज़ार-दो हज़ार रुपये बड़ी आसानी से कमा सकते हैं।''

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस भरकर कहा, ''ऐसे भाग्य होते तो यों धक्के न खाता फिरता।''

लाला सदानंद बोले, ''एक काम करें।''

''क्या?''

''आप बैठकर जितनी अच्छी-अच्छी तसवीरें हैं, सबको अलग छाँट लें।''

''बहुत अच्छा।''

जब यह कर चुकें तो मुझे सूचित कर दें।

''आप क्या करेंगे?''

''मैं इनकी एलबम बनाऊँगा और आपकी तरफ़ से विज्ञापन दे दूँगा। हो सकता है यह विज्ञापन किसी शौक़ीन के हाथ पड़ जाए और आप दो-चार पैसे कमा लें। तसवीरें बहुत बढ़िया हैं।''

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयले की खान में हीरा मिल जाएगा। घोर निराशा ने सभी द्वार बंद कर दिए थे। लाला सदानंद के कहने से पंडित जी दिन भर बैठकर तसवीरें छाँटते रहे। शाम तक दो सौ बढ़िया चित्र जमा हो गए। उस समय वे उन्हें देखकर स्वयं उछल पड़े। उनके मुख पर ख़ुशी की आभा नाचने लगी। वे उन चित्रों की ओर इस तरह देखते थे, मानो उनमें से हर एक में दस-दस के नोट हों। बच्चों को उधर देखने तक न देते थे। वे सफलता के विचार से ही झूमने लगे थे। उनके दिन बदलते दिखाई देने लगे।

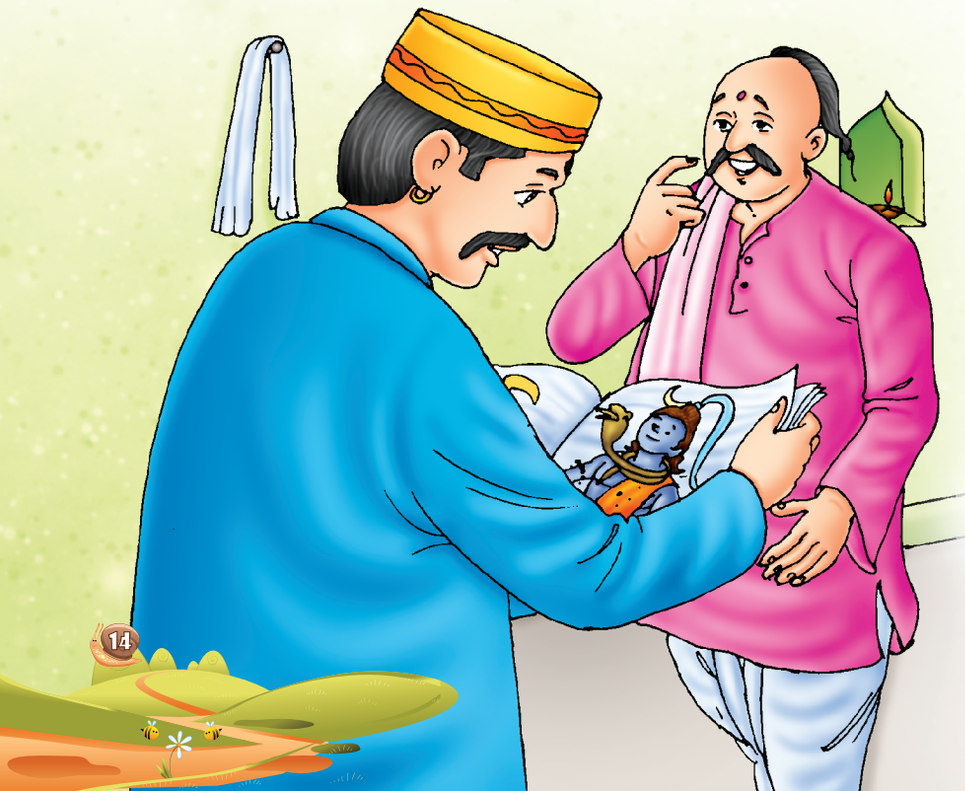

लाला सदानंद ने चित्रों को एलबम में लगवाया

और समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दिया। अब पंडित शादीराम हर समय डाकिये की प्रतीक्षा करते रहते थे। वे रोज़ सोचते थे कि आज कोई चिट्ठी आएगी। दिन बीत जाता और कोई चिट्ठी न आती थी। रात को आशा सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी। मगर दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर जुड़ जाती थी।

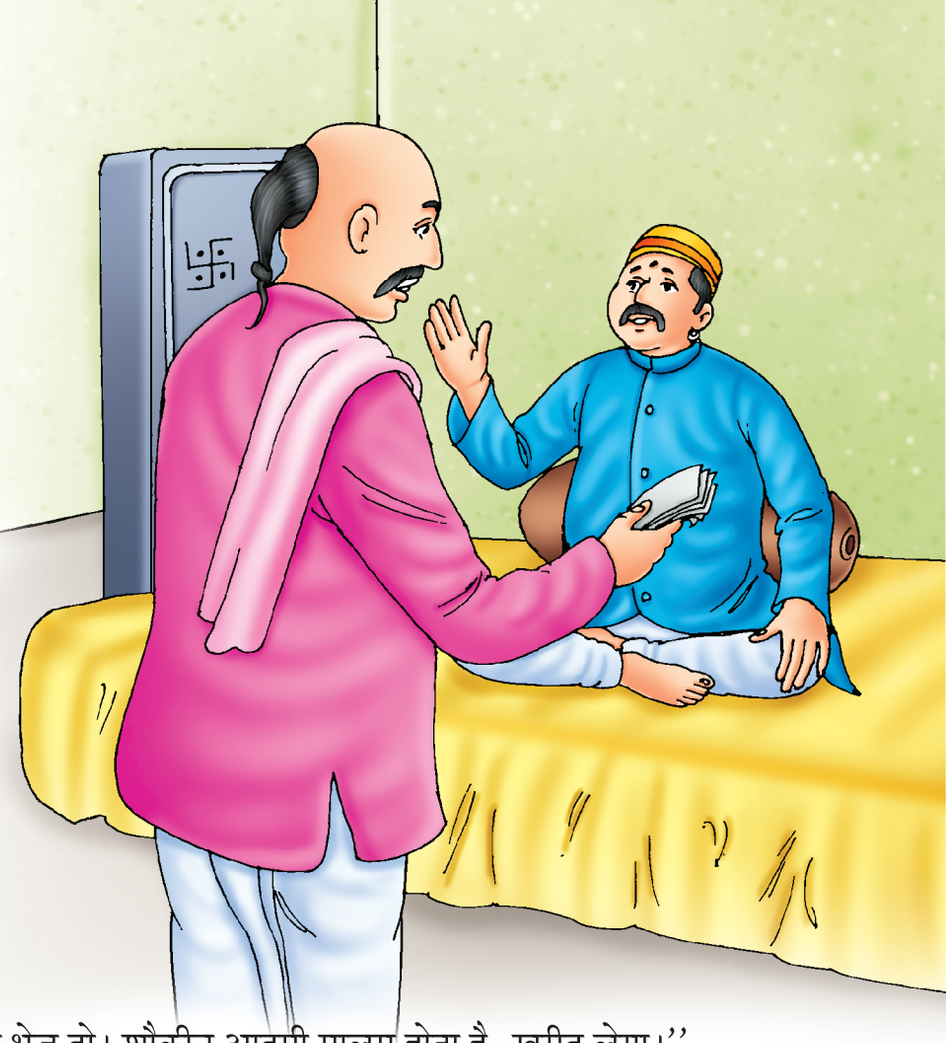

दिन बीतते गए। आख़िर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे। कोलकाता के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि एलबम भेज दो। अगर पसंद आ गया, तो ख़रीद लिया जाएगा। पंडित शादीराम दौड़े हुए लाला सदानंद के पास पहुँचे और उन्हें पत्र दिखाया।

लाला सदानंद ने पत्र को अच्छी तरह देखा, और जवाब दिया, ''रजिस्ट्री कराकर एलबम भेज दो। शौक़ीन आदमी मालूम होता है, ख़रीद लेगा।''

''और मूल्य?''

''लिख दो, एक हज़ार रुपये से कम पर सौदा न होगा।''

कुछ दिन बाद उन्हें जवाब में एक बीमा मिला। पंडित शादीराम के हाथ-पैर से ज़्यादा उनका दिल काँप रहा था। उन्होंने लिफ़ाफ़े को खोला और उछल पड़े। उसमें सौ-सौ के दस नोट थे। पहले उनके भाग्य ने करवट बदली थी, अब वह पूर्ण रूप से उठकर बैठ गया। पंडित शादीराम सोचने लगे, 'अगर दो हज़ार रुपये लिख देता, तो शायद उतने ही मिल जाते।' इस सोच ने उनकी सारी ख़ुशी किरकिरी कर दी।

साँझ के बाद वह लाला सदानंद के पास गए और पाँच सौ रुपये सामने रखकर बोले, ''परमात्मा का धन्यवाद है कि मुझे इस क़र्ज़ से छुटकारा मिला। अपने रुपये सँभाल लीजिए। आपने जो दया और सज्जनता दिखाई है, उसे मैं मरते दम तक न भूलूँगा।''

लाला सदानंद ने हैरान-सा होकर पूछा–

''पंडित जी, क्या सेठ ने एलबम ख़रीद लिया?''

''जी हाँ! ख़रीद लिया।''

''और रुपये भी आ गए?''

''जी हाँ।''

''कितने रुपये आए?''

''एक हज़ार।''

''मेरे जैसे ग़रीब ब्राह्मण के पास क्या था जो आपका क़र्ज़ चुका देता? परमात्मा ने मेरी सुन ली।''

''मेरा विचार है कि आप ये रुपये अपने पास ही रखें। मैं आपका यजमान हूँ। मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ। अगर मैंने चार पैसे दे दिए, तो कौन-सा गज़ब हो गया!''

पंडित जी की आँखों में आँसू आ गए। वे बोले, ''आप जैसे सज्जन संसार में बहुत थोड़े हैं। परमात्मा आपको चिरंजीवी रखें, मगर अब तो मैं यह रुपये न लूँगा। इतने वर्ष आपने माँगे तक नहीं, मुझे आज इस बोझ से हलका होने दीजिए।'' लाला सदानंद ने चुपचाप रुपये रख लिए। मनुष्य रुपये देकर भी ऐसा प्रसन्न हो सकता है, इसका आभास उन्हें पहली बार हुआ।

छह महीने बीत गए।

लाला सदानंद बीमार थे। पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते थे। एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे। पास पड़ी चौकी पर पंडित शादीराम बैठे, रोगी को भगवद्गीता सुना रहे थे।

एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गए। पंडित जी ने गीता छोड़ दी और उनके सिरहाने बैठ गए। स्त्री गरम दूध लेने के लिए बाहर दौड़ी और माँ घबराकर बेटे को आवाज़ देने लगी। उसी समय पंडित जी को रोगी के सिरहाने के नीचे कोई चुभती हुई चीज़ जान पड़ी। उन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वह सख़्त चीज़ वही एलबम थी, जिसे किसी सेठ ने नहीं, बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने ख़रीद लिया था।

पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया है। मगर यह जानकर उनके हृदय को चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं, बल्कि पहले से दुगुना हो गया है। उन्होंने एक ठंडी साँस भरी।

कुछ देर बाद लाला सदानंद को होश आया। उन्होंने पंडित जी से एलबम छीन लिया। धीरे से कहा, ''यह एलबम अब मैंने सेठ साहब से मँगवा लिया है।''

पंडित जी जानते थे कि यजमान झूठ बोल रहे हैं। वे किसी भी तरह यह न कह सके कि आप झूठ बोल रहे हैं, परंतु अब वे उन्हें पहले से भी अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और ऊँचा समझने लगे थे।

–सुदर्शन

जीवन मूल्य हमें सदैव दूसरों की मदद करनी चाहिए।

जीवन परिचय



सुदर्शन का जन्म सन् 1896 ई. में अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत के सियालकोट नामक शहर में हुआ था। इनका वास्तविक नाम पं. बदरीनाथ शर्मा था। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– 'पुष्पलता', 'सुप्रभात', 'सुदर्शन सुधा', 'सुदर्शन सुमन', 'पनघट', 'नगीने' (कहानी-संग्रह), 'परिवर्तन', 'भागवंती' (उपन्यास), 'अंजना' (नाटक) आदि। सन् 1967 ई. में इनका देहावसान हो गया।

अभ्यास

श्रवण एवं वाचन कौशल



ऋण – क़र्ज़; **यजमान** - दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणों से धार्मिक कार्य करानेवाला; **अदा करना** – चुकाना; **भलेमानस** – अच्छा आदमी; **रक़म** – धन; **मासिक** – महीने में एक बार होनेवाला; **विज्ञापन** – प्रचार; **रजिस्ट्री** – पंजीकरण; **बेसुध** – बेहोश; **सिरहाने** – सिर की तरफ़।

श्रुतलेख

ऋण, हृदय, शौक़ीन, मारवाड़ी, विज्ञापन, रजिस्ट्री, चिरंजीवी

पठन एवं लेखन कौशल

(क) मौखिक प्रश्न–

1. पंडित शादीराम किसका रुपया अदा करना चाहते थे?
2. पंडित शादीराम का लड़का कितने महीने बीमार रहा?
3. शादीराम को एलबम के कितने पैसे मिले?
4. तसवीरों को काटकर शादीराम ने क्या बनाया?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. पंडित शादीराम पत्रिकाओं को रद्दी में क्यों नहीं बेचते थे?

   .....

2. एलबम ख़रीदने के लिए शादीराम के पास किसका पत्र आया?

   .....

3. अलमारी में किन-किन भाषाओं की पत्रिकाएँ थीं?

   .....

4. शादीराम किसको भगवद्गीता सुना रहे थे?

   .....

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. शादीराम के हृदय पर बरछियाँ क्यों चल जाती थीं?

   .....

   .....

2. लाला सदानंद ने पत्रिकाओं को देखकर शादीराम को क्या सलाह दी?

.....

.....

3. शादीराम ने लाला सदानंद का ऋण किस प्रकार चुकता किया?

.....

.....

4. सदानंद के बीमार पड़ने पर शादीराम ने क्या किया?

.....

.....

(घ) सही वाक्य के आगे 'सही' तथा ग़लत के आगे 'ग़लत' लिखिए–

1. पंडित शादीराम ग़रीब थे परंतु दिल के बुरे न थे। .....
2. अलमारी में कई सौ हिंदी, बांग्ला और अंग्रेज़ी की किताबें थीं। .....
3. लाला सदानंद ने चित्रों को एलबम में लगवाया। .....
4. लिफ़ाफ़े में सौ-सौ के बीस नोट थे। .....
5. पंडित शादीराम रोगी को रामायण सुना रहे थे। .....

व्याकरण एवं भाषा कौशल

(क) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य-प्रयोग कीजिए–

1. हृदय पर बरछियाँ चलना = ...
2. सिर पीट लेना = ...
3. आँखें न उठना = ...
4. झूम उठना = ...

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए–

1. परोपकार = ... 2. परमात्मा = ...
3. सदानंद = ... 4. सज्जन = ...
5. समाचार = ... 6. परमाश्चर्य = ...

(ग) वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे–

1. लाला सदानंद ने पत्र को अच्छी तरह देखा।
2. पंडित जी की आँखों में आँसू आ गए।

यहाँ 'लाला सदानंद' और 'पंडित जी' के विषय में कुछ कहा जा रहा है, इसलिए ये उद्देश्य हैं। निम्नलिखित में उद्देश्य पद लिखिए–

1. पंडित शादीराम ने ठंडी आह भरी। = ...
2. मारवाड़ी सेठ ने एलबम ख़रीद लिया था। = ...

(घ) क्रिया के मूल शब्द को धातु कहते हैं। जैसे– 'पढ़ना', 'लिखना' में 'पढ़' और 'लिख' धातु है। निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों में धातु स्पष्ट कीजिए–

1. उनके दिन बदलते <u>दिखाई</u> देने लगे। = ...
2. आज कोई चिट्ठी <u>आएगी</u>। = ...

रचनात्मक अभिव्यक्ति

परोपकार के महत्त्व पर दस वाक्य लिखिए–

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....
7. .....
8. .....
9. .....
10. .....

कौशल विकास

(क) 'वृक्षों का जीवन परोपकार के लिए होता है।' इस वाक्य की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

.....

.....

.....

.....

(ख) बच्चो! हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक वृक्ष का गहराई से विश्लेषण करके यह जाना कि पीपल और वट वृक्ष सभी वृक्षों में खास और अलग हैं। इनके धरती पर होने से ही हमारे पर्यावरण की रक्षा होती है। इसीलिए उन्होंने इन वृक्षों के संरक्षण के लिए पूजा का विधान बनाया। अपने गुरुजनों से इन वृक्षों के महत्त्व से संबंधित जानकारी एकत्र कीजिए।

पाठ 3

सच्ची वीरता

(निबंध)

पाठ से पहले

वीर पुरुष सच्चे अर्थों में निडर होते हैं। वे कठिन से कठिन परिस्थितियों का साहस के साथ सामना करते हैं। इस पाठ में वीर पुरुषों के गुणों का वर्णन रोचक ढंग से किया गया है।

सच्चे वीर पुरुष धीर, गंभीर और आज़ाद होते हैं। उनके मन की गंभीरता और शक्ति समुद्र की तरह विशाल और गहरी तथा आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है, परंतु जब ये शेर गरजते हैं, तब सदियों तक उनकी दहाड़ सुनाई देती रहती है और अन्य सब आवाज़ें बंद हो जाती हैं।

एक बार एक बाग़ी ग़ुलाम और एक बादशाह के बीच बातचीत हुई। यह ग़ुलाम कैदी दिल से आज़ाद था। बादशाह ने कहा, ''मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। तुम क्या कर सकते हो?'' ग़ुलाम बोला, ''हाँ, मैं फाँसी पर चढ़ जाऊँगा, पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ।'' इस ग़ुलाम ने दुनिया के बादशाहों की हद दिखला दी। बस इतने ही जोर और इतनी ही शेखी पर ये झूठे राजा मारपीट कर कायर लोगों को डराते हैं। चूँकि लोग शरीर को अपने जीवन का केंद्र समझते हैं इसलिए जहाँ किसी ने इनके शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाया, वहीं वे मारे डर के अधमरे हो जाते हैं। केवल शरीर-रक्षा के निमित्त ये लोग इन राजाओं की ऊपरी मन से पूजा करते हैं।



सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते हैं। फ़ौज, तोप, बंदूक आदि के बिना ही वे शहंशाह होते हैं। मंसूर ने अपनी मौज में आकर कहा कि मैं ख़ुदा हूँ। दुनियावी बादशाह ने कहा 'यह काफ़िर है।' मगर मंसूर ने अपने कलाम को बंद न किया। पत्थर मार-मारकर दुनिया ने उसके शरीर की बुरी दशा की, परंतु उस मर्द के मुँह से हर बार यही शब्द निकला 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि) मैं ही ब्रह्म हूँ। मंसूर का सूली पर चढ़ना उसके लिए सिर्फ़ खेल था।

शिक्षण संकेत

निबंध का वाचन कराएँ एवं देश के कतिपय वीर पुरुषों की सूची बनवाएँ।

महाराजा रणजीत सिंह ने फ़ौज से कहा अटक के पार जाओ। अटक चढ़ी हुई थी और भयंकर लहरें उठी हुई थीं। जब फ़ौज ने कुछ उत्साह प्रकट न किया, तब उस वीर को जोश आया। महाराजा ने अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया। कहा जाता है कि अटक सूख गई और सब पार निकल गए।

लाखों आदमी मरने-मारने को तैयार हो रहे हैं। गोलियाँ धुआँधार बरस रही हैं। आल्प्स के पहाड़ों पर फ़ौज ने चढ़ना ज्यों ही असंभव समझा, त्यों ही वीर नेपोलियन को जोश आया और उसने कहा, 'आल्प्स है ही नहीं'। फ़ौज को निश्चय हो गया कि आल्प्स नहीं है और सब लोग पहाड़ के पार हो गए।

एक भेड़ चरानेवाली और सत्वगुण में डूबी हुई युवती के दिल में जोश आते ही फ्रांस एक शिकस्त से बच गया। वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी उसकी अभिव्यक्ति लड़ने मरने में, ख़ून बहाने में, तलवार-तोप के सामने जान गँवाने में होती है, तो कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अंतःप्रेरणा है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया। एक नयी रौनक, एक नया रंग, एक नयी बहार तथा एक नयी प्रभुता संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नयी होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता देशकाल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई, तभी एक नया स्वरूप लेकर आई, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गए।

वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके विचार सबके विचार हो जाते हैं। उसके संकल्प सबके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की तरह जीवन के अरण्य में ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिए, बिना किसी के दूध पिलाए, बिना किसी के हाथ लगाए तैयार होते हैं और दुनिया के मैदान मे अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं।

हर बार दिखावा और नाम के लिए छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना पहले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन जरा-सी चीज़ है। वह सिर्फ़ एक बार के लिए काफी है। बंदूक में केवल एक गोली है। उसे एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है। हाँ! कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इसलिए हट जाते हैं कि उनका मनोबल (जीवन) किसी और अधिक बड़े काम के लिए बच जाए। गरजनेवाले बादल ऐसे ही चले जाते हैं, परंतु बरसनेवाले बादल जरा-सी देर में मूसलाधार वर्षा कर जाते हैं।

वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केंद्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाए तो हिल जाए, परंतु वीर के दिल में जो दैवीय केंद्र है, वह अचल है। कुदरत की नीति चाहे विकसित होकर अपने बल को नष्ट करने की हो, मगर वीरों की नीति बल को हर तरह से इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है। वह वीर क्या, जो टीन के बर्तन की तरह झट-से गर्म और ठंडा हो जाता है। सदियों नीचे आग जलती हो तो भी शायद गर्म हो और हज़ारों वर्ष बर्फ़ उस पर जमती रहे तो भी क्या मजाल जो उसकी वाणी तक ठंडी हो। उसे ख़ुद गर्म और सर्द होने से क्या मतलब! सत्य की सदा जीत होती है। यह भी वीरता का एक चिह्न है। विजय वहीं होती है जहाँ

पवित्रता और प्रेम है। दुनिया धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर खड़ी है। जो अपने आप को उन नियमों के साथ अभिन्न करके रहता है, उसी की विजय होती है।

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं, तब हमारे अंदर भी वीरता की लहरें उठती हैं। वीरता का रंग चढ़ जाता है, परंतु प्रायः वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण यही है कि हम सबको केवल दिखाने के लिए वीर बनना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर अपने जीवन के केंद्र में निवास करो और सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह को छोड़कर जीवन की तहों में घुसो, तब नये रंग खिलेंगे।

–सरदार पूर्ण सिंह

जीवन मूल्य वीरता मनुष्य का एक उत्तम गुण है।

जीवन परिचय



सरदार पूर्ण सिंह का जन्म 17 फरवरी, सन् 1881 को एबटाबाद (जो इस समय पाकिस्तान में है) में हुआ था। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं- 'खुले मैदान', 'गुरु गोविंद सिंह', 'खुले आसमानी रंग' आदि। इनकी मृत्यु 31 मार्च, सन् 1931 को हुई।



श्रवण एवं वाचन कौशल



आज़ाद– स्वतंत्र; **अचल** – स्थिर; **बाग़ी** - विद्रोही; **तिरस्कार** – अनादर; **शेखी** – हेकड़ी, शान; **कायर** – डरपोक; **निमित्त** - कारण; **फ़ौज** – सेना; **काफ़िर** – ईश्वर को न माननेवाला; **कलाम** – शब्द, वाणी; **अटक** – एक नदी; **दरिया** – नदी; **सत्वगुण** – सादगी से युक्त; **शिकस्त** – पराजय; **अभिव्यक्ति** – प्रकट होना; **अरण्य** – जंगल; **बुजदिली**– कायरता; **कुदरत** – प्रकृति; **चिरस्थायी** – बहुत समय तक रहनेवाला।

श्रुतलेख

तिरस्कार, ब्रह्मास्मि, नेपोलियन, आलस्य, सत्वगुण, आध्यात्मिक

पठन एवं लेखन कौशल

(क) मौखिक प्रश्न–

1. दिल से कौन आज़ाद था?
2. 'अनलहक' का क्या अर्थ है?
3. अटक के पार जाने के लिए किसने कहा?

4. वीर नेपोलियन ने जोश में अपनी फ़ौज से क्या कहा था?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. एक सच्चे वीर पुरुष में कौन-कौन से गुण होते हैं?

.....

2. बादशाह द्वारा जान से मारने की धमकी देने पर ग़ुलाम ने क्या कहा?

.....

3. नेपोलियन ने फ़ौज को कैसे आल्प्स पार करवाया?

.....

4. वीरों को लेखक ने देवदार के वृक्षों के समान क्यों कहा है?

.....

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. सच्ची वीरता किसे कहते हैं?

.....

.....

2. सच्चे वीर कारखाने में क्यों नहीं बनाए जा सकते?

.....

.....

3. 'वीरता एक प्रकार की अंतःप्रेरणा है।' इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

4. पाठ में लेखक ने किस-किस प्रकार के वीरों का वर्णन किया है?

.....

.....

(घ) किसने, किससे कहा–

1. यह काफ़िर है .....
2. अनलहक .....
3. आल्प्स है ही नहीं .....
4. अटक के पार जाओ .....

व्याकरण एवं भाषा कौशल

(क) निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य-प्रयोग कीजिए–

1. आ बैल मुझे मार = ...
2. अपनी करनी पार उतरनी = ...
3. एक पंथ दो काज = ...
4. सहज पके सो मीठा होय = ...
5. एक और एक ग्यारह होते हैं = ...

(ख) निम्नलिखित शब्दों में 'त्व' प्रत्यय जोड़कर लिखिए–

1. महत् = ... 2. प्रभु = ...
3. सत् = ... 4. पुरुष = ...

(ग) 'अ' या 'अन्' लगाकर विपरीतार्थक शब्द बनाइए–

1. संभव = ... 2. स्थाई = ...
3. आवश्यक = ... 4. साधारण = ...
5. उपस्थित = ... 6. उदार = ...

रचनात्मक अभिव्यक्ति

पाठ में वीर पुरुषों की तुलना बरसते बादलों से तथा कायर पुरुषों की तुलना गरजते बादलों से की गई है। इसका अर्थ समझते हुए वीर और कायर पुरुषों की विशेषताएँ लिखिए–

वीर पुरुष	कायर पुरुष
1.	1. .....
2.	2. .....
3.	3. .....

कौशल विकास

(क) किसी साहसपूर्ण कार्य को बहादुरी के साथ करना वीरता है। यदि आपके नगर अथवा गाँव में आग लगने या बाढ़ आ जाने से स्थिति भयावह हो जाती है, तो आप अपने मित्रों के साथ पीड़ितों की किस प्रकार मदद करेंगे? अपने शब्दों में लिखिए–

.....

.....

.....

(ख) देश की पाँच वीर नारियों के चित्र अपनी अभ्यास-पुस्तिका में चिपकाकर उनका संक्षिप्त परिचय लिखिए।

(ग) वीर रस की कोई कविता इंटरनेट की मदद से ढूँढ़िए और उसे कंठस्थ कीजिए।

